



विस्तृत प्रतिवेदन

राष्ट्रीय संविमर्श

सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका

06 अप्रैल, 2026

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
आईयूसीटीई कैंपस, सुंदर बगिया, नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005

Inter University Centre for Teacher Education
(An Autonomous Institution of UGC, MoE, Govt. of India)

© IUCTE, April, 2026

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored or distributed in any form or by any means, electronic or mechanical, magnetic tape, including photocopying, recording or otherwise, without written permission from the publisher.

Published by Senior Administrative Officer,
Inter University Centre for Teacher Education (IUCTE)
Banaras Hindu University, Sundar Bagiya, Nariya-B.L.W. Road, Varanasi-221005
Design & Layout by Shubham Prajapati (Technical Assistant, IUCTE) & Printed at Jembo Photo State & Internet

निदेशक की कलम से

शिक्षा व्यक्ति के विकास तथा व्यक्ति के माध्यम से समाज/राष्ट्र के विकास, शैक्षिक, सांस्कृतिक विरासत, ज्ञान-विज्ञान के संरक्षण तथा उन्नयन का सर्वाधिक सशक्त साधन है और अध्यापक इस साधन का सबसे महत्वपूर्ण व प्रभावी प्रयोक्ता है जो व्यक्ति, समाज और देश को दिशा देता है।



एक शिक्षक मात्र ज्ञान का संप्रेषक नहीं, अपितु समाज का संवाहक, समरसता का संवर्धक एवं राष्ट्र-निर्माण का आधार स्तंभ होता है। भारतीय चिंतन परंपरा में गुरु को 'परब्रह्म' की संज्ञा दी गई है, क्योंकि वही व्यक्ति के भीतर मानवीय मूल्यों और समत्व की भावना का जागरण करता है। यही भाव सामाजिक समरसता के निर्माण का मूलाधार है।

'सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका' विषयक राष्ट्रीय संविमर्श, वर्तमान समय की एक अत्यंत प्रासंगिक एवं आवश्यक पहल है। विविधताओं से परिपूर्ण हमारे समाज में समता, सौहार्द एवं पारस्परिक सम्मान की स्थापना के लिए शिक्षक की भूमिका अत्यंत निर्णायक है। शिक्षक ही वह सेतु है, जो ज्ञान, संस्कार और सामाजिक चेतना को एकसूत्र में पिरोते हुए समाज को सुदृढ़ दिशा प्रदान करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने शिक्षा को समग्र, मूल्यपरक एवं भारतीय जीवन-दृष्टि से अनुप्राणित करने पर बल दिया है। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षक का दायित्व और भी व्यापक हो जाता है कि वह न केवल विषय-विशेषज्ञ हो, बल्कि सामाजिक संवेदनशीलता, नैतिकता एवं समावेशी दृष्टिकोण का प्रेरक भी बने।

मुझे विश्वास है कि यह राष्ट्रीय संविमर्श शिक्षाविदों, अध्यापकों एवं शोधार्थियों को एक सशक्त मंच प्रदान करेगा, जहाँ विचारों का मंथन समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा प्रशस्त करेगा।

इस अवसर पर मैं सभी प्रतिभागियों के सार्थक सहभाग एवं आयोजन की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

प्रो. प्रेम नारायण सिंह
निदेशक

शुभकामना संदेश

‘सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका’ विषयक राष्ट्रीय संविमर्श के आयोजन पर सभी प्रतिभागियों, शिक्षाविदों एवं शोधार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

समाज की सम्यक् उन्नति, स्थायी विकास तथा सुदृढ़ संरचना के लिए सामाजिक समरसता का संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। समरसता केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि वह आधारशिला है जिस पर एक न्यायपूर्ण, समावेशी एवं प्रगतिशील समाज का निर्माण होता है।



शिक्षक विद्यार्थियों में समानता, सह-अस्तित्व, करुणा, नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मानवीय मूल्यों का संचार करता है। एक संवेदनशील एवं जागरूक शिक्षक अपने आचरण, विचार एवं शिक्षण-पद्धति के माध्यम से विद्यार्थियों को यह सिखाता है कि विविधताओं के बीच भी एकता और समरसता कैसे स्थापित की जा सकती है।

वर्तमान वैश्विक एवं राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में, जहाँ तीव्र सामाजिक परिवर्तन, तकनीकी विकास एवं सांस्कृतिक अंतःक्रिया के कारण नई चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं, वहाँ सामाजिक समरसता को बनाए रखना और भी महत्वपूर्ण हो गया है। ऐसे समय में यह राष्ट्रीय संविमर्श अत्यंत सार्थक एवं प्रासंगिक है। यह मंच न केवल विभिन्न विचारधाराओं के बीच संवाद को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि शोध एवं शैक्षणिक विमर्श को एक नई दिशा भी प्रदान करेगा।

ऐसे विमर्श से शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार के साथ-साथ समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा भी सुनिश्चित होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस मंच पर प्रस्तुत विचार एवं अनुभव शिक्षा जगत को समृद्ध करेंगे तथा सामाजिक समरसता की भावना को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। यह संविमर्श न केवल बौद्धिक आदान-प्रदान का माध्यम बनेगा, बल्कि एक संवेदनशील, समावेशी एवं जागरूक समाज की आधारशिला भी स्थापित करेगा।

इस महत्वपूर्ण आयोजन की सफलता एवं सभी प्रतिभागियों की ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं सार्थक सहभागिता हेतु पुनः हार्दिक मंगलकामनाएँ।

सादर।

प्रो. आशीष श्रीवास्तव
संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध

अनुक्रमणिका

क्रम.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	कार्यक्रम के बारे में	1
2.	कार्यक्रम का उद्देश्य	1
3.	अपेक्षित परिणाम	1
4.	विषय एवं उप-विषय	2
5.	अतिथि परिचय	2-5
6.	कार्यक्रम का विस्तृत विवरण	5-7
7.	पैनल परिचर्चा व समापन सत्र	8-12
8.	परिणाम (Outcomes)	13
9.	आयोजन समिति	14
10.	समाचार पत्रों में	15-21
11.	कार्यक्रम की झलकियाँ	22

कार्यक्रम के बारे में

"शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल साक्षरता नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर 'मनुष्यता' का जागरण है।"

भारतीय वाङ्मय का शाश्वत घोष 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (संपूर्ण पृथ्वी ही परिवार है) केवल एक विचार नहीं, बल्कि हमारी जीवन पद्धति रही है। ऋग्वेद का 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्' (हम साथ चलें, साथ बोलें और हमारे मन एक हों) का सूक्त सामाजिक समरसता का प्राचीनतम बीज है। भारतीय संस्कृति ने सदैव 'विविधता में एकता' को स्वीकार किया है, जहाँ समन्वय और सह-अस्तित्व ही समाज के प्राण रहे हैं।

आज का युग सूचना क्रांति और वैश्वीकरण का युग है। तकनीकी रूप से हम परस्पर जुड़े हुए हैं, किंतु विडंबना यह है कि वैचारिक ध्रुवीकरण और सामाजिक विखंडन की चुनौतियां भी बढ़ी हैं। आधुनिकता की दौड़ में मानवीय संवेदनाओं और आपसी संवाद में एक 'रिक्तता' (Gap) उत्पन्न हुई है। संकुचित विचारधाराएं और पूर्वाग्रह अक्सर सामाजिक समरसता के ताने-बाने को प्रभावित करते हैं। ऐसे में समरसता केवल एक नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि राष्ट्र की अखंडता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए एक अनिवार्य जीवन-दर्शन बन गई है।

शिक्षक समाज का वह 'वैचारिक इंजीनियर' है जो कक्षाओं में केवल पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाता, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के दृष्टिकोण का निर्माण करता है। विद्यालय वह लघु-समाज है जहाँ विभिन्न जातियों, धर्मों और आर्थिक पृष्ठभूमियों के छात्र एक साथ बैठते हैं। एक शिक्षक की शिक्षण पद्धति (Pedagogy) और उसका स्वयं का आचरण (Conduct) वह दर्पण है, जिसमें छात्र समता और न्याय के मूल्यों को देखते हैं।

सामाजिक समरसता का अर्थ केवल 'भेदभाव का अभाव' नहीं है, बल्कि 'विविधता का उत्सव' मनाना है। जब एक शिक्षक अपनी कक्षा में हर छात्र की विशिष्टता का सम्मान करता है, तो वह अनजाने में ही समाज से ऊंच-नीच, वैमनस्य और संकीर्णता के जहर को समाप्त कर रहा होता है। यह संविमर्श इसी विचार पर केंद्रित है कि कैसे शिक्षक अपनी बौद्धिक और नैतिक चेतना से छात्रों में समता, बंधुत्व, करुणा और आपसी सम्मान के ऐसे बीज बोए, जो भविष्य में एक सशक्त और समरस राष्ट्र के रूप में पल्लवित हों।

कार्यक्रम का उद्देश्य

1. शिक्षा और सामाजिक समरसता के सम्बंधों पर शैक्षणिक विमर्श
2. शिक्षक शिक्षा में समावेशी दृष्टिकोण को सुदृढ करना
3. विविधता- संवेदनशील शिक्षण पद्धतियों को प्रोत्साहित करना
4. भारतीय चिंतन परम्परा और आधुनिक शिक्षा विमर्श के बीच संवाद
5. शिक्षा संस्थानों में समरस वातावरण निर्माण हेतु सुझाव

अपेक्षित परिणाम

1. शिक्षा में सामाजिक समरसता के विषय पर संवाद
2. समावेशी शिक्षण पद्धतियों के प्रति जागरुकता
3. शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में समरसता आधारित पहल
4. एनईपी 2020 और एसडीजी के अनुरूप शैक्षिक दृष्टिकोण को सुदृढ करना

विषय: सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका एवं उप-विषय

1. भारतीय ज्ञान परंपरा और समरसता के मूल तत्व
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020: न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा
3. शिक्षक शिक्षा में विविधता और प्रबंधन
4. शिक्षक: सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में
5. मूल्य-परक शिक्षा और संवेगात्मक बुद्धिमत्ता (EQ)
6. डिजिटल नागरिकता और सामाजिक सद्भाव

अतिथि परिचय

मा. डॉ. इन्द्रेश कुमार जी

मा. डॉ. इन्द्रेश कुमार जी एक प्रखर विचारक और सामाजिक सुधारक तथा केंद्रीय कार्यकारिणी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ सदस्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र-निर्माण और सामाजिक समरसता के लिए समर्पित किया है। पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज, चंडीगढ़ से मैकेनिकल इंजीनियरिंग (B.Tech) की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत, उन्होंने वर्ष 1970 में राष्ट्र सेवा के संकल्प के साथ संघ के पूर्णकालिक प्रचारक के रूप में अपने सार्वजनिक जीवन का प्रारंभ किया। उनके बौद्धिक और सामाजिक अवदानों को देखते हुए लखनऊ स्थित ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें मानद डॉक्टरेट से सम्मानित किया गया है। डॉ. इन्द्रेश कुमार जी ने विशेष रूप से मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के मुख्य संरक्षक के रूप में अल्पसंख्यक समुदायों को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ने, जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के विरुद्ध जमीनी स्तर पर संगठन खड़ा करने और भारत-तिब्बत संबंधों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लोकतंत्र की बहाली और पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उन्हें एक दूरदर्शी राष्ट्रवादी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करती है।



प्रो. हर्षद पटेल

प्रतिष्ठित शिक्षाविद् और गांधीवादी विचारक प्रो. हर्षद पटेल वर्तमान में महात्मा गांधी द्वारा स्थापित ऐतिहासिक संस्थान गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के कुलपति के रूप में कार्यरत हैं। शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में व्यापक अनुभव रखने वाले प्रो. पटेल इस संस्थान के न्यासी और सचिव की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी संभाल रहे हैं। इससे पूर्व उन्होंने चिल्ड्रेन यूनिवर्सिटी और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर्स एजुकेशन (IITE) जैसे प्रमुख संस्थानों का सफल नेतृत्व किया है। राष्ट्रीय स्तर पर उनकी विशेषज्ञता को स्वीकारते हुए उन्हें NCERT और NCF-ECCE जैसी नीति-निर्धारक समितियों में सदस्य के रूप में सम्मिलित किया गया है। शिक्षा जगत में इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (ITEP) के क्रियान्वयन और गांधीवादी आदर्शों—सत्य, सादगी एवं सेवा—को आधुनिक शैक्षणिक ढांचे में समाहित करने में उनका योगदान अतुलनीय है। उनका व्यक्तित्व पारंपरिक गांधीवादी मूल्यों और समकालीन शैक्षिक नवाचारों के समन्वय का प्रतीक है।



प्रो. (डॉ.) पृथ्वीश नाग

प्रतिष्ठित भूगोलवेत्ता, मानचित्रकार और कुशल शिक्षाविद् प्रो. (डॉ.) पृथ्वीश नाग का भारतीय उच्च शिक्षा और प्रशासनिक सेवाओं में अत्यंत गौरवशाली योगदान रहा है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) के स्वर्ण पदक विजेता रहे प्रो. नाग ने भारत के महासर्वेक्षक (Surveyor General of India) और राष्ट्रीय एटलस एवं विषयगत मानचित्रण संगठन (NATMO) के निदेशक जैसे शीर्ष पदों पर अपनी सेवाएं दी हैं। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के कुलपति के रूप में उनका कार्यकाल संस्थागत विकास और अकादमिक उत्कृष्टता के लिए जाना जाता है, जिसके दौरान उन्होंने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति का अतिरिक्त प्रभार भी संभाला। डिजिटल मैपिंग, रिमोट सेंसिंग और जीआईएस (GIS) के क्षेत्र में विशेषज्ञ प्रो. नाग ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) में वैज्ञानिक के रूप में तथा ओमान में संयुक्त राष्ट्र (UN) के सलाहकार के रूप में भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। वर्तमान में वाराणसी स्थित शेपा (SHEPA) समूह के निदेशक के रूप में कार्यरत प्रो. नाग की विद्वता उनकी 77 से अधिक प्रकाशित पुस्तकों और 135 शोध पत्रों में प्रतिबिंबित होती है, जो उन्हें भूगोल और शिक्षण जगत का एक मूर्धन्य व्यक्तित्व बनाती है।



प्रो. बिहारी लाल शर्मा

प्रो. बिहारी लाल शर्मा संस्कृत जगत के एक शीर्षस्थ विद्वान, प्रख्यात ज्योतिषाचार्य और कुशल प्रशासक हैं, जो वर्तमान में (2026) वाराणसी स्थित ऐतिहासिक सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा का नेतृत्व कर रहे हैं। मूल रूप से हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले के निवासी प्रो. शर्मा ने अपनी विद्वता और कर्मठता से संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं। कुलपति नियुक्त होने से पूर्व, उन्होंने नई दिल्ली स्थित श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग में प्रो. और वेद-वेदांग संकाय के प्रमुख के रूप में अपनी लंबी और यशस्वी सेवाएं दीं। ज्योतिष शास्त्र और प्राचीन भारतीय विज्ञान में उनकी विशेषज्ञता सर्वविदित है। उनके कुशल और दूरदर्शी नेतृत्व का ही परिणाम है कि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय नित्य अकादमिक विशिष्टताओं को प्राप्त कर रहा है। शैक्षणिक प्रशासन के साथ-साथ वे नीतिगत स्तर पर भी अत्यंत सक्रिय हैं; सितंबर 2025 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने उन्हें 'अंतर-विश्वविद्यालयीय योग विज्ञान केंद्र' की शासी परिषद का सदस्य मनोनीत किया है। प्रो. शर्मा केवल एक प्रशासक ही नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के प्रबल संवाहक भी हैं, जो काशी और देश के अन्य सांस्कृतिक केंद्रों के बीच भाषाई और आध्यात्मिक सेतु बनाने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने प्राचीन पांडुलिपियों के संरक्षण और आधुनिक तकनीक के साथ संस्कृत शिक्षा के समन्वय पर विशेष बल दिया है। उनकी निष्ठा, सरल स्वभाव और शास्त्रोक्त विजन उन्हें आधुनिक भारत में संस्कृत और ओरिएंटल स्टडीज के पुनरुद्धार के लिए एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व बनाता है।



प्रो. आशीष श्रीवास्तव

उच्च शिक्षा नीति और शिक्षक शिक्षा के विशेषज्ञ प्रो. आशीष श्रीवास्तव वर्तमान में शिक्षा मंत्रालय के स्वायत्त संस्थान अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (IUCTE), वाराणसी में संकाय प्रमुख (Dean) एवं प्रोफेसर के रूप में सेवारत हैं। गणित, दर्शनशास्त्र और शिक्षाशास्त्र जैसे विविध विषयों में उच्च शैक्षणिक योग्यता रखने वाले प्रो. श्रीवास्तव ने शिक्षा के क्षेत्र में दो दशकों से अधिक का अनुकरणीय योगदान दिया है। IUCTE में पदभार ग्रहण करने से पूर्व, उन्होंने महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी और विश्व-भारती (शांतिनिकेतन) जैसे प्रतिष्ठित केंद्रीय विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर एवं वरिष्ठ पदों पर अपनी सेवाएँ दी हैं। अनुसंधान के क्षेत्र में उनकी विशेष रुचि शिक्षक शिक्षा, पाठ्यक्रम सिद्धांत (Curriculum Theory) और उच्च शिक्षा नीतियों में है, जिस पर उनके 40 से अधिक शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। वे AICTE और NAAC जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं में सलाहकार एवं बोर्ड सदस्य के रूप में भी सक्रिय हैं। उनका व्यापक अनुभव और नीतिगत दृष्टिकोण उन्हें शैक्षणिक विमर्श का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनाता है।



प्रो. सुनील कुमार सिंह

शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान रखने वाले प्रो. सुनील कुमार सिंह, काशी हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) के शिक्षा संकाय में वरिष्ठ आचार्य (Senior Professor) के रूप में कार्यरत हैं। आप इस संकाय से D.Litt. की उपाधि प्राप्त करने वाले प्रथम विद्वान हैं, जो आपकी असाधारण विद्वत्ता का परिचायक है। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर स्वर्ण पदक विजेता रहे प्रो. सिंह के पास लगभग तीन दशकों का व्यापक शिक्षण एवं शोध अनुभव है। उनकी विशेषज्ञता के प्रमुख क्षेत्रों में भारतीय शिक्षा के समसामयिक मुद्दे, शैक्षिक दर्शन, मूल्य एवं नैतिकता तथा पर्यावरणीय शिक्षा सम्मिलित हैं। 100 से अधिक शोध पत्रों एवं पुस्तकों के लेखक प्रो. सिंह ने अब तक 75 से अधिक पीएचडी और पोस्ट-डॉक्टरल शोधार्थियों का सफल मार्गदर्शन किया है। अकादमिक उत्कृष्टता के साथ-साथ उन्होंने 'टीच फॉर बीएचयू' के संयोजक और IQAC समन्वयक जैसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक दायित्वों का भी कुशलतापूर्वक निर्वहन किया है। शिक्षा के प्रति उनके समर्पण हेतु उन्हें 'डॉ. एस. राधाकृष्णन पुरस्कार' जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित किया जा चुका है।



डॉ. राजा पाठक

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक तकनीक के समन्वय के प्रति समर्पित डॉ. राजा पाठक, वर्तमान में अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (IUCTE), काशी हिंदू विश्वविद्यालय (BHU), वाराणसी में सहायक आचार्य के रूप में कार्यरत हैं। ३० जून १९६९ को जन्मे डॉ. पाठक की विशेषज्ञता के क्षेत्र अत्यंत व्यापक और समसामयिक हैं, जिनमें प्राचीन गणित, ज्योतिष, वैदिक ब्रह्मांड विज्ञान (Vedic Cosmology) के साथ-साथ शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और 'जनरेटिव एआई' का अनुप्रयोग मुख्य रूप से सम्मिलित है। शैक्षिक तकनीक (EdTech) और डिजिटल कंटेंट क्रिएशन में विशेषज्ञ डॉ. पाठक ने ई-पीजी पाठशाला (e-PG Pathshala) के लिए १०० से अधिक व्याख्यानों के माध्यम से अपना



महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे विभिन्न अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं के सह-संपादक रहे हैं और उन्होंने शैक्षिक अनुसंधान में एआई के उपयोग पर केंद्रित कई राष्ट्रीय स्तर के व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों (PDP) का सफल संयोजन किया है। सैकड़ों विद्यार्थियों को नेट (NET) और जेआरएफ (JRF) की निःशुल्क कोचिंग प्रदान करने वाले डॉ. पाठक, परंपरा और आधुनिकता के संगम का एक जीवंत उदाहरण हैं।

कार्यक्रम का विस्तृत विवरण

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

अपने विषयोपस्थापन व स्वागत उद्बोधन में प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुये कहा कि सामाजिक समरसता केवल एक वैचारिक अवधारणा नहीं, बल्कि शिक्षा व्यवस्था का मूल उद्देश्य होना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि वर्तमान समय में, जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल प्लेटफॉर्म समाज को जोड़ने का दावा करते हैं, वहीं वास्तविक सामाजिक संबंधों में दूरी बढ़ती जा रही है। इस संदर्भ में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि विद्यालय और विश्वविद्यालय समाज का प्रतिबिंब होते हैं तथा शिक्षकों के पूर्वाग्रह अनजाने में नई पीढ़ी को प्रभावित करते हैं।



उन्होंने जोर दिया कि शिक्षक शिक्षा केवल विषयवस्तु के संप्रेषण तक सीमित न रहकर संवेदनशीलता, समावेशन और संवाद की क्षमता विकसित करने का माध्यम होनी चाहिए। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम पूर्ण करने की प्रवृत्ति के स्थान पर मानवीय मूल्यों के विकास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा को समाज की समस्याओं के अनुरूप ढालने के बजाय समाज को शिक्षा के आदर्शों के अनुरूप परिवर्तित करना आवश्यक है।

संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 17 और 46 का उल्लेख करते हुए उन्होंने समरसता के संवैधानिक आधार को रेखांकित किया तथा शिक्षा को मौलिक अधिकार से हटाए जाने के ऐतिहासिक निर्णय पर चिंता व्यक्त की। कोठारी आयोग द्वारा प्रस्तावित 'कॉमन स्कूल सिस्टम' की उपेक्षा को उन्होंने सामाजिक विभाजन का एक कारण बताया।

अंततः उन्होंने पुनः सबका अभिनंदन करते हुये, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक मूल्यों और मानवतावाद को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए समरसता को नीति नहीं, बल्कि एक सामाजिक आंदोलन के रूप में विकसित करने का आह्वान किया।

डॉ. इंद्रेश कुमार

अपने उद्बोधन में डॉ. इंद्रेश कुमार ने सामाजिक समरसता को आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक आधारों पर स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने "भाइयों और बहनों" जैसे संबोधन को केवल औपचारिक न मानकर एक गहरे आध्यात्मिक संबंध का प्रतीक बताया, जो ईश्वर द्वारा निर्धारित होता है और सामाजिक संकटों के समाधान में सहायक बनता है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट किया कि सांस्कृतिक मूल्य और मानवतावादी दृष्टिकोण विश्व स्तर पर परिवर्तनकारी भूमिका निभा सकते हैं। विवेकानंद का "ब्रदर्स एंड सिस्टर्स" संबोधन न केवल बौद्धिक क्रांति का प्रतीक बना, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा भी स्थापित की।

उन्होंने भारतीय संस्कृति में 'मातृभूमि' के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि भावनात्मक और नैतिक चेतना का केंद्र है। समाज में विविधता को संघर्ष नहीं, बल्कि सौंदर्य के रूप में स्वीकार करने की भारतीय परंपरा को उन्होंने समरसता का मूल आधार बताया। उनके अनुसार, जब विविधताओं को संघर्ष के रूप में देखा जाता है, तब विभाजन और हिंसा उत्पन्न होती है, जबकि उन्हें सौंदर्य मानने पर समाज में एकता और सद्भाव विकसित होता है।



राम और शबरी प्रसंग का उल्लेख करते हुए उन्होंने यह स्पष्ट किया कि भारतीय परंपरा में समता और छुआछूत-निरोध का संदेश उपदेश से नहीं, बल्कि आचरण से दिया गया है। उन्होंने कहा कि "अस्पृश्यता पाप और अपराध है" और इसे समाप्त करना समाज की नैतिक जिम्मेदारी है। इतिहास साक्षी है कि जिन्होंने विषमता को धर्म माना, वे कभी समाज में आदर्श नहीं बन पाए।

डॉ. कुमार ने यह भी कहा कि भारत की ज्ञान परंपरा संवाद, धैर्य और 'मान लो' की वैज्ञानिक प्रवृत्ति पर आधारित रही है, जो टकराव के स्थान पर समाधान का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने शिक्षकों और बौद्धिक वर्ग को विशेष जिम्मेदारी सौंपते हुए कहा कि वे समाज को विषमता से निकालकर समरसता की ओर ले जाएँ। शिक्षा और आचरण के माध्यम से ही यह परिवर्तन संभव है।

अंततः उन्होंने काशी जैसे सांस्कृतिक केंद्रों से अपेक्षा की कि वे समरसता, संवाद और मानवीय मूल्यों के प्रसार का वैश्विक केंद्र बनें। उनके अनुसार, समरसता ही शांति, विकास और मानवता की आधारशिला है, और इसके अभाव में समाज में संघर्ष और असंतोष बढ़ेगा।

प्रो. हर्षद पटेल

अपने उद्बोधन में प्रो. हर्षद पटेल ने सामाजिक समरसता को व्यवहारिक जीवन में उतारने की आवश्यकता पर बल देते हुए शिक्षक की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि सामाजिक समरसता केवल सैद्धांतिक विमर्श तक सीमित न रहकर आचरण में प्रकट होनी चाहिए, जिसका उत्कृष्ट उदाहरण काशी के घाटों पर दिखाई देने वाली सांस्कृतिक पवित्रता और सामूहिकता है। उन्होंने 'राम राज्य' की अवधारणा का उल्लेख करते हुए महात्मा गांधी के विचारों को स्मरण किया, जिन्होंने अस्पृश्यता निवारण और सर्वधर्म समभाव को सामाजिक जीवन का आधार माना।

उन्होंने गुजरात विद्यापीठ के संदर्भ में बताया कि वहाँ सामाजिक समरसता को व्यवहार में उतारने के लिए विशेष पहल की जा रही है। आचार्य देवव्रत द्वारा गांवों में जाकर दलित एवं आदिवासी परिवारों के साथ समय बिताना, उनके घर भोजन करना तथा ग्राम-जीवन से जुड़ना, समरसता के सशक्त उदाहरण हैं। इस प्रकार के प्रयास यह सिद्ध करते हैं कि वास्तविक परिवर्तन आचरण के माध्यम से ही संभव है।

प्रो. पटेल ने शिक्षा व्यवस्था की व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत में लगभग 30 करोड़ विद्यार्थी और एक करोड़ से अधिक शिक्षक हैं, जो सामाजिक परिवर्तन के सबसे प्रभावशाली माध्यम बन सकते हैं। वर्तमान समय में जब पारिवारिक संवाद सीमित होता जा रहा है, तब शिक्षक ही वह व्यक्ति है जो विद्यार्थियों के

साथ निरंतर संपर्क में रहता है और उनके दृष्टिकोण को सकारात्मक दिशा दे सकता है। इसलिए शिक्षक को केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता का प्रेरक बनना होगा।

उन्होंने बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक कक्षाओं की चुनौतियों का उल्लेख करते हुए कहा कि आज के विद्यालयों में विभिन्न राज्यों, भाषाओं और संस्कृतियों के विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं। ऐसे में शिक्षक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि वह प्रत्येक विद्यार्थी को सहज और सम्मानित अनुभव कराए। गुजरात विद्यापीठ के उदाहरण से उन्होंने स्पष्ट किया कि किस प्रकार उत्तर-पूर्व के विद्यार्थियों को स्थानीय संस्कृति से जोड़ते हुए एक समावेशी वातावरण तैयार किया गया।



अंततः उन्होंने कहा कि विविधता को संघर्ष नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सौंदर्य के रूप में स्वीकार करना ही समरसता की कुंजी है। शिक्षक इस विचार को व्यवहार में उतारकर समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। यदि शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से समरसता का संदेश जन-जन तक पहुँचाया जाए, तो यह एक जनआंदोलन का रूप ले सकता है और भारत को पुनः 'विश्व गुरु' के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा।

प्रो. प्रेम नारायण सिंह

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने संक्षेप में सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास, चरित्र निर्माण और संस्कारों के संवर्धन का सबसे प्रभावी साधन है। इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वही शिक्षा के उद्देश्यों को व्यवहार में परिणत करता है।



उन्होंने विशेष रूप से इस बात पर बल दिया कि समरसता सहित जीवन के प्रत्येक पक्ष में शिक्षक की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। किंतु यह आवश्यक है कि शिक्षक अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए उसे व्यावहारिक स्तर पर लागू करें। भारतीय परंपरा का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यहाँ उपदेश से अधिक आचरण के माध्यम से शिक्षा देने की परंपरा रही है।

अंततः उन्होंने सुझाव दिया कि ऐसे संविमर्श केवल विचार तक सीमित न रहें, बल्कि इनके आधार पर ठोस कार्ययोजना बनाकर सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जाएँ। सभी को धन्यवाद करते हुए उन्होंने अपना उद्बोधन समाप्त किया।

उद्घाटन सत्र का शुभारम्भ माता सरस्वती, महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। मंगलाचरण डॉ. राजा पाठक, स्वागत भाषण व विषयोपस्थापन, संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने एवं धन्यवाद ज्ञापन व कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया। उद्घाटन सत्र में अन्य शैक्षणिक संस्थानों के अध्यापकों एवं छात्रों सहित केन्द्र के सभी अध्यापकों, अधिकारियों एवं कर्मचरियों की उपस्थिति रही।

पैनल परिचर्चा

प्रो. सुनील कुमार सिंह

अपने उद्बोधन में प्रो. सुनील कुमार सिंह ने मूल्यपरक शिक्षा और संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व को गहराई से रेखांकित किया। उन्होंने प्रारंभ में एक मूल प्रश्न उठाया कि क्या मूल्यों के बिना शिक्षा का कोई अस्तित्व हो सकता है। उनके अनुसार, यदि शिक्षा मूल्यनिष्ठ नहीं है, तो उसका कोई वास्तविक अर्थ नहीं रह जाता। उन्होंने मूल्यों की तुलना एक वृक्ष की जड़ों से करते हुए कहा कि यदि जड़ें सुदृढ़ नहीं होंगी, तो संपूर्ण विकास संभव नहीं है।

उन्होंने यह स्पष्ट किया कि केवल शिक्षा संस्थान ही नहीं, बल्कि परिवार, शिक्षक और समग्र सामाजिक वातावरण मिलकर मूल्यों का निर्माण करते हैं। ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि साधारण पृष्ठभूमि से आने के बावजूद उच्च मूल्य कैसे विकसित हो सकते हैं। साथ ही विवेकचूड़ामणि का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आत्म-प्रयास के बिना मूल्य ग्रहण संभव नहीं है।



उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में आर्ट इंटीग्रेशन, स्पोर्ट्स इंटीग्रेशन और 'नॉलेज ऑफ इंडिया' की आवश्यकता पर बल दिया। उनके अनुसार, वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इन तत्वों की कमी के कारण विद्यार्थियों में नेतृत्व, सहयोग और सांस्कृतिक समझ का अभाव देखा जा रहा है। पारंपरिक भारतीय ज्ञान, जैसे पंचतंत्र, हितोपदेश और जातक कथाएँ को पाठ्यक्रम में समाहित करने की आवश्यकता भी उन्होंने बताई।

उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में नैतिक निर्णयों की कमी पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षक समुदाय को उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। मानवीय, नैतिक, संवैधानिक और सार्वभौमिक मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, शांति और प्रेम को व्यवहार में लाना आवश्यक है।

अंततः उन्होंने संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की चर्चा करते हुए कहा कि केवल ज्ञान या डिग्रियाँ पर्याप्त नहीं हैं। व्यक्ति को अपनी भावनाओं और वृत्तियों पर नियंत्रण करना सीखना होगा। डेनियल गोलमैन के सिद्धांतों का उल्लेख करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि वास्तविक विकास तभी संभव है, जब व्यक्ति आत्मानुशासन और आंतरिक परिष्कार को अपनाए।

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने अपने चर्चा सत्र में कहा कि एक सशक्त लोकतंत्र के लिए नागरिकों का स्पष्ट और तार्किक सोच रखना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि भ्रमित समाज न तो प्रगति कर सकता है और न ही अपनी उपलब्धियों को बनाए रख सकता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि केवल समाधान सुझाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे लागू करने की क्षमता विकसित करना भी जरूरी है।



उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में जोर दिया कि न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा का मार्ग मुख्यतः करिकुलम, पेडागोजी, मूल्यांकन और शोध के माध्यम से ही संभव है। लेकिन वर्तमान समय में विश्वविद्यालयों में “कॉपी-पेस्ट” मानसिकता हावी है, जहां बिना मौलिकता के पाठ्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं, जो शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सिलेबस पूरा करना नहीं होना चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों की सोचने-समझने की क्षमता (मेंटल फैकल्टी) का विकास करना होना चाहिए। इसके लिए कंटेंट को कम कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर ध्यान देना आवश्यक है।

प्रो. श्रीवास्तव ने समावेशी शिक्षा के लिए विविधता और स्थानीय संदर्भों के सम्मान को जरूरी बताया। साथ ही, उन्होंने यह महत्वपूर्ण बात रखी कि विचार (idea) भाषा से अधिक महत्वपूर्ण है, और भाषा के कारण किसी के ज्ञान या अभिव्यक्ति को सीमित नहीं किया जाना चाहिए।

अंत में उन्होंने कहा कि यदि भारत को “विश्व गुरु” बनना है, तो सबसे पहले अपने शिक्षा तंत्र को सुधारना होगा और संस्थानों को बहु-सांस्कृतिक, बहुभाषी और बहुविषयक बनाना होगा। इसके लिए हमें स्वयं के प्रति ईमानदार, उत्तरदायी और जिम्मेदार बनना होगा। तभी न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

डॉ. राजा पाठक

डॉ. राजा पाठक ने अपने चर्चा सत्र में कहा कि यदि भारत को पुनः अपने उत्कर्ष और परम वैभव तक पहुंचाना है, तो इसका मार्ग भारतीय ज्ञान परंपरा से होकर ही जाता है। उन्होंने भारतीय परंपरा के मूल तत्वों को सामाजिक समरसता से जोड़ते हुए स्पष्ट किया कि “समरसता” को “समानता” या “सौहार्द” के समान नहीं समझना चाहिए। समरसता का अर्थ है समाज में प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकता के अनुसार अवसर और संसाधन प्रदान करना, ठीक उसी प्रकार जैसे भोजन में विभिन्न तत्व संतुलित मात्रा में मिलाए जाते हैं।



उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे संगीत में अलग-अलग वाद्ययंत्र अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं और संतुलन बनाकर मधुरता उत्पन्न करते हैं, वैसे ही समाज में भी सभी वर्गों की भूमिका अलग-अलग होते हुए भी संतुलन आवश्यक है। यही संतुलन समरसता का आधार है और विकास का मार्ग भी।

डॉ. पाठक ने विशेष रूप से शिक्षकों की भूमिका पर जोर दिया और कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल विषय ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों और जीवन कौशल को भी विकसित करती है। उन्होंने भास्कराचार्य की प्रसिद्ध कृति “लीलावती” का उदाहरण देते हुए बताया कि प्राचीन शिक्षण पद्धति में गणित जैसे विषय को भी इस प्रकार पढ़ाया जाता था कि उसमें जीवन दर्शन, नैतिक शिक्षा और व्यावहारिक कौशल का समावेश हो जाता था।

उन्होंने बताया कि “लीलावती” में गणित के प्रश्नों के माध्यम से न केवल गणितीय ज्ञान दिया जाता था, बल्कि साथ ही भारतीय दर्शन, संस्कृति और जीवन मूल्यों को भी सहज रूप में समझाया जाता था। उदाहरण के रूप में, शून्य और अनंत की अवधारणा को ब्रह्म और सृष्टि से जोड़कर समझाया गया, जिससे विद्यार्थी को गहन

चिंतन और व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता था। इसी प्रकार “मिश्रण” जैसे गणितीय अध्याय के माध्यम से व्यावहारिक कौशल जैसे ‘धूप (अगरबत्ती) बनाना’ भी सिखाया जाता था।

उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विषयों को अलग-अलग करके पढ़ाने से छात्र के समग्र विकास में बाधा आती है, जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा एक समग्र (holistic) दृष्टिकोण अपनाती है, जिसमें एक ही विषय के माध्यम से ज्ञान, कौशल और चरित्र तीनों का विकास संभव है।

अंत में डॉ. पाठक ने निष्कर्ष रूप में कहा कि सामाजिक समरसता स्थापित करने के लिए शिक्षा का भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ना अत्यंत आवश्यक है। यदि शिक्षक इस परंपरा को समझकर उसे अपने शिक्षण में अपनाएं, तो समाज में संतुलन, नैतिकता और समरसता को प्रभावी रूप से स्थापित किया जा सकता है।

समापन सत्र

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र, वाराणसी के सभागार में एकत्रित सभी उपस्थित प्रतिभागियों का पुनः स्वागत करते हुए प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में उल्लेख किया कि इस विषय पर दिनभर विस्तृत चर्चा हो चुकी है, इसलिए वे अपने वक्तव्य को संक्षिप्त रखते हुए अपनी बात रख रहे हैं। उन्होंने ‘कुरुक्षेत्र’ से उद्धृत करते हुए सामाजिक समानता और न्याय के महत्व पर बल दिया कि समाज में तब तक शांति स्थापित नहीं हो सकती जब तक संसाधनों का समान वितरण न हो। उन्होंने ‘सामाजिक समरसता में शिक्षक की भूमिका’ विषय पर चल रहे चिंतन को आगे बढ़ाते हुए आशा व्यक्त की कि प्रतिभागी इस विचार-विमर्श को व्यावहारिक रूप में लागू करेंगे। उन्होंने कहा कि यह संवाद केवल चर्चा तक सीमित न रहकर कक्षा-कक्षों और शोध प्रयोगशालाओं तक पहुंचे, ताकि इसका वास्तविक प्रभाव दिखाई दे। अंत में उन्होंने सभी को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम की आगे की प्रक्रिया के लिए मंच को अग्रसर किया।



प्रो. पृथ्वीश नाग

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. पृथ्वीश नाग ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ‘सामाजिक समरसता’ और ‘शिक्षक की भूमिका’ दो भिन्न प्रतीत होने वाले, किंतु परस्पर संबद्ध आयाम हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि जहाँ कहीं भी सामाजिक विषमता (डिस्पैरिटी) विद्यमान होती है, वहाँ समरसता का अभाव स्वतः उत्पन्न हो जाता है और इसके परिणामस्वरूप विविध प्रकार की पहचानें (आइडेंटिटी) विकसित होने लगती हैं। जब ये पहचानें भौगोलिक सीमाओं से जुड़कर क्षेत्रीय स्वरूप ग्रहण कर लेती हैं, तब समस्या और जटिल हो जाती है। यह केवल व्यक्तियों के मध्य असमानता का प्रश्न नहीं रह जाता, बल्कि एक क्षेत्र के दूसरे क्षेत्र के प्रति दृष्टिकोण को भी प्रभावित करता है। उन्होंने ऐतिहासिक संदर्भों का उल्लेख करते हुए कहा कि जहाँ-जहाँ ऐसी विषमताएँ बढ़ीं, वहाँ संघर्ष भी तीव्र



हुए। अतः आवश्यक है कि इन अंतरों को यथासंभव कम किया जाए, भले ही उन्हें पूर्णतः समाप्त करना संभव न हो।

उन्होंने समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक तथा मानवशास्त्रीय सिद्धांतों का उल्लेख करते हुए कहा कि ये सभी इस बात की व्याख्या करते हैं कि असमानताएँ कैसे उत्पन्न होती हैं और किस प्रकार उन्हें न्यून किया जा सकता है। उन्होंने नक्सल प्रभावित क्षेत्रों का उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे विषमता के कारण विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र 'समस्या-क्षेत्र' में परिवर्तित हो जाते हैं। उनके अनुसार, यदि इन समस्याओं का समाधान योजनाबद्ध प्रक्रिया के अंतर्गत किया जाए, तो अधिक प्रभावी परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

शिक्षक की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए प्रो. नाग ने कहा कि नवीन शिक्षा नीति (NEP) के अंतर्गत शिक्षक की जिम्मेदारियाँ अत्यंत व्यापक हो गई हैं। अब शिक्षक केवल पाठ्य-अध्यापन तक सीमित नहीं है, बल्कि उसे समाज में परिवर्तन का प्रेरक (ट्रांसफॉर्मेशनल एजेंट) भी माना गया है। उन्होंने प्रश्न उठाया कि क्या वर्तमान शिक्षक इस विस्तारित भूमिका को आत्मसात कर पा रहे हैं। उनके अनुसार, यह आवश्यक है कि शिक्षक स्वयं को नई नीतियों के अनुरूप ढालें और समाज में सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करें।

उन्होंने वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य की चुनौतियों की ओर संकेत करते हुए कहा कि अनेक संस्थानों में नामांकन (एनरोलमेंट) में गिरावट देखी जा रही है, जो चिंताजनक है। उन्होंने यह भी प्रश्न उठाया कि क्या शिक्षक विद्यार्थियों को पर्याप्त रूप से प्रेरित कर पा रहे हैं। तकनीकी युग में, जहाँ ज्ञान के स्रोत जैसे Google सहज उपलब्ध हैं, वहाँ शिक्षक की प्रासंगिकता तभी बनी रह सकती है जब वह पाठ्यपुस्तकों से आगे बढ़कर विद्यार्थियों को व्यापक, संदर्भित एवं रोचक ज्ञान प्रदान करे।

अपने अनुभवों के माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया कि पूर्वकाल में शिक्षकों का ज्ञान-विस्तार अत्यंत व्यापक होता था, जिससे वे विद्यार्थियों में जिज्ञासा उत्पन्न करते थे। आज आवश्यकता है कि शिक्षक विषय को जीवन्त एवं रोचक बनाएँ, उसमें ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं व्यक्तिगत संदर्भ जोड़ें, ताकि विद्यार्थी विषय के साथ गहरे स्तर पर जुड़ सकें।

अंततः उन्होंने निष्कर्षतः कहा कि यदि शिक्षक को आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी परिवेश में सफल होना है, तो उसे पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक और डिजिटल माध्यमों से परे जाकर चिंतन करना होगा। तभी वह विद्यार्थियों को आकर्षित कर सकेगा, उनकी ज्ञान-सीमा का विस्तार कर सकेगा और शिक्षा को सार्थक बना सकेगा।

प्रो. बिहारी लाल शर्मा

प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में कार्यक्रम में उपस्थित सभी विद्वानों, अतिथियों एवं श्रोताओं का सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया। उन्होंने पृथ्वीश नाग द्वारा प्रस्तुत विचारों का उल्लेख करते हुए 'सामाजिक समरसता' और 'शिक्षक की भूमिका' को अत्यंत सारगर्भित एवं समयोचित विषय बताया। उनके अनुसार, समरस समाज के निर्माण का वास्तविक शिल्पकार शिक्षक ही होता है।

उन्होंने 'समाज' की संकल्पना स्पष्ट करते हुए कहा कि समाज केवल जनसमूह नहीं, बल्कि वह संगठित इकाई है जो समान उद्देश्य, समन्वित गति और समष्टिगत हित की भावना से संचालित होती है। जब व्यक्ति जाति,



वर्ग, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब तथा अपने-पराए के भेद से ऊपर उठकर सह-अस्तित्व का भाव अपनाता है, तभी समरसता का वास्तविक स्वरूप प्रकट होता है।

भारतीय परंपरा का उल्लेख करते हुए उन्होंने गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समन्वित रूप के रूप में व्याख्यायित किया, जो सृजन, संरक्षण एवं परिवर्तन तीनों का वाहक होता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा ही वह प्रभावी साधन है, जो अज्ञानजन्य भेदभाव को समाप्त कर सकती है। ज्ञान को उन्होंने सर्वाधिक पवित्र तत्व बताते हुए कहा कि यह व्यक्ति के अंतर्मन का रूपांतरण करने में सक्षम है।

उन्होंने शिक्षक के गुणों का उल्लेख करते हुए बताया कि एक आदर्श शिक्षक प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक, शिक्षक एवं बोधक होता है। वह न केवल प्रेरणा देता है, बल्कि उचित मार्गदर्शन, प्रभावी संप्रेषण, गहन विषय-विवेचना और विद्यार्थी की समझ का परीक्षण भी करता है। ऐसे गुणों से युक्त शिक्षक ही विद्यार्थियों के लिए आदर्श बन सकता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि आज विद्यार्थियों के आदर्श बदल रहे हैं और शिक्षक की भूमिका अपेक्षित रूप से प्रभावी नहीं दिखती। यदि शिक्षक स्वयं को आदर्श के रूप में स्थापित करे, तो समाज में समरसता स्वतः विकसित हो सकती है।

उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि किसी भी राष्ट्र के सशक्तिकरण का मार्ग शिक्षा संस्थानों से होकर ही गुजरता है। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के कक्षा-कक्ष ही समरस, सशक्त और जागरूक समाज के निर्माण के केंद्र हैं।

अंत में उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस विमर्श के निष्कर्ष व्यापक स्तर पर समाज को दिशा प्रदान करेंगे। सभी प्रतिभागियों के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समरस समाज एवं सशक्त राष्ट्र निर्माण का आह्वान किया और सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

प्रो. प्रेम नारायण सिंह

प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने अध्यक्षीय उद्घोषण में संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित विचार रखते हुए 'बिखरने' और 'निखरने' के संतुलन पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि सामूहिकता के साथ कार्य करते हुए भी निरंतर आत्म-विकास आवश्यक है, तभी वास्तविक प्रगति संभव है।

उन्होंने अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि का उल्लेख करते हुए बताया कि दीर्घ समय से लंबित शोध केंद्र को अंततः संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय की कार्य परिषद से स्वीकृति प्राप्त हो गई है, जिससे संस्थान के विकास को नई गति मिलेगी। इस उपलब्धि के लिए उन्होंने विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया।

शिक्षक की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षक का दायित्व केवल पाठ्य-अध्यापन तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, दृष्टि और सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करना भी है। उन्होंने उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट किया कि जब शिक्षक विद्यार्थियों को वास्तविक सामाजिक परिस्थितियों से जोड़ता है, तब उनमें समझ और उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है।



उन्होंने 'शिक्षा सबके द्वार' जैसे कार्यक्रमों का उल्लेख करते हुए बताया कि जब शिक्षक-प्रशिक्षु समाज में जाकर कार्य करते हैं, तो उन्हें जमीनी सच्चाइयों का बोध होता है, जिससे उनका दृष्टिकोण व्यापक बनता है।

अंत में उन्होंने इस बात पर बल दिया कि शिक्षण संस्थानों को परंपरागत सीमाओं से आगे बढ़कर समाज से जुड़ना होगा। शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों की भूमिका इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अपने उद्बोधन का समापन किया।

समापन सत्र का शुभारम्भ माता सरस्वती, महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। मंगलाचरण डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी, स्वागत भाषण व विषयोपस्थापन, संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने एवं धन्यवाद ज्ञापन व कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया। समापन सत्र में अन्य शैक्षणिक संस्थानों के अध्यापकों एवं छात्रों सहित केन्द्र के सभी अध्यापकों, अधिकारियों एवं कर्मचरियों की उपस्थिति रही।

परिणाम (Outcomes)

- शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक समरसता विषयक सार्थक एवं व्यापक संवाद स्थापित हुआ, जिससे विभिन्न दृष्टिकोणों का समन्वय संभव हो सका।
- समावेशी शिक्षण पद्धतियों के प्रति प्रतिभागियों में जागरूकता एवं संवेदनशीलता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में समरसता-आधारित पहलों को समाहित करने हेतु ठोस सुझाव एवं कार्यनीतियाँ विकसित हुईं।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा Sustainable Development Goals के अनुरूप समावेशी एवं समतामूलक शैक्षिक दृष्टिकोण को सुदृढ़ करने की दिशा में स्पष्ट मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

आयोजन समिति

संरक्षक

प्रो. प्रेम नारायण सिंह,
निदेशक, अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी

कार्यक्रम निदेशक

प्रो. आशीष श्रीवास्तव
संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी
सहायक आचार्य

तकनीकी टीम

श्री कुलदीप पाण्डेय, सिस्टम एनालिस्ट
श्री राणा प्रताप राव, इंजीनियर हार्डवेयर
श्री विकास जानू, वेबमास्टर
श्री अनुभव कुमार पाण्डेय, सलाहकार संपादक (मल्टीमीडिया)
श्री आनंद जायसवाल, सर्वर इंजीनियर
श्री अभिज्ञान कुमार श्रीवास्तव, तकनीशियन (सॉफ्टवेयर प्रबंधन)
श्री शुभम प्रजापति, तकनीकी सहायक (मल्टीमीडिया)

प्रशासनिक टीम

डॉ. ए.पी. माथुर, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
डॉ. अनिल कुमार सिंह, एस.ओ. (प्रशासन)
श्री आनंद कुमार यादव, एल.डी.सी.

लेखा अनुभाग

श्री एम.आर. रामसुब्रमण्यम, प्रशासनिक अधिकारी (वित्त)
डॉ. विजय कुमार राय, सहायक
सुश्री पूजा सिंह, एलडीसी
सुश्री नेहा पटेल, एलडीसी

आईयूसीटीई, वाराणसी में सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका पर राष्ट्रीय संविमर्श आयोजित



संवाददाता

वाराणसी, अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई), वाराणसी में आज सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता, समावेशिता एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना तथा शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन तथा माँ सरस्वती एवं महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात चिंतक डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत में जीवन मूल्यों को केवल उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया गया है। उन्होंने सामाजिक समरसता को व्यवहार में उतारने पर बल दिया। मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल, कुलपति, गुजरात विद्यापीठ ने अपने संबोधन में समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि सामाजिक समरसता की जिम्मेदारी मुख्यतः शिक्षक पर निर्भर करती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने शिक्षा को परिवर्तन का सबसे

प्रभावी माध्यम बताया। आईयूसीटीई के संकाय प्रमुख प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। सत्र का संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक ने प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में सामाजिक समरसता के निर्माण में शिक्षक: चुनौतियाँ और समाधान विषय पर पैनल चर्चा आयोजित हुई। इसमें प्रो. सुनील कुमार सिंह (बीएचयू) ने ह्यमूल्य-परक शिक्षा एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर विचार रखे, जबकि प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने ह्यनई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत समावेशी शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. राजा पाठक ने ह्यभारतीय ज्ञान परंपरा एवं समरसता के मूल तत्वों को विस्तार से प्रस्तुत किया। समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रो. पृथ्वीश नाग, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ ने शिक्षा की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के समावेश पर बल दिया। अध्यक्षीय उद्घोषण में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की।

लेहरी टाइम्स, पृष्ठ-08, दिनांक .07.04.2026

न्यायसंगत समाज बनाने की जिम्मेदारी शिक्षक पर

जागरण संगठन, वाराणसी : अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई) में सोमवार को सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका विषय पर राष्ट्रीय संविमर्श आयोजित किया गया। शिक्षाविदों ने शिक्षा के माध्यम से मानवीय मूल्यों और समावेशी समाज के निर्माण में शिक्षक की निर्णायक भूमिका पर चर्चा की। मुख्य अतिथि गुजरात विद्यापीठ के कुलपति प्रो. हर्षद पटेल ने कहा कि न्यायसंगत समाज बनाने की पूरी जिम्मेदारी शिक्षक के कंधों पर होती है। काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति प्रो. पृथ्वीश नाग और संविमर्श के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों और भारतीय संस्कृति के समावेश को अनिवार्य बताया। ख्यात चिंतक डा. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत की विशेषता स्त्री है कि यहां जीवन मूल्यों को केवल उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से सीखा है। आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह, प्रो. आशीष श्रीवास्तव, प्रो. सुनील सिंह व डा. राजा पाठक ने विचार प्रकट किए।

दैनिक जागरण, पृष्ठ-04, दिनांक .07.04.2026

भारत ने जीवन मूल्यों को आचरण में भी उतारा: इंद्रेश

वाराणसी। अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई) में सोमवार को 'सामाजिक समरसता शिक्षक की भूमिका' पर संगोष्ठी हुई। कार्यक्रम में मौजूद आरएसएस के डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत ने जीवन मूल्यों को उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया है।

गुजरात विद्यापीठ के कुलपति प्रो. हर्षद पटेल ने बताया कि सामाजिक समरसता को जिम्मेदारी शिक्षक पर है। काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति प्रो. पृथ्वीश नाग ने शिक्षा और शिक्षकों की भूमिका पर विचार रखे। संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के समावेश पर बल दिया।

विभिन्न सत्रों में आयोजित चर्चा में बीएचयू के प्रो. सुनील कुमार सिंह ने 'मूल्य-परक शिक्षा एवं भावनात्मक

■ अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में संगोष्ठी हुई
■ 'सामाजिक समरसता शिक्षक की भूमिका' पर विद्वानों ने रस विचार

बुद्धिमत्ता' पर प्रकाश डाला, जबकि प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने समावेशी शिक्षा की जरूरत बताई। आईयूसीटीई के डॉ. राजा पाठक ने 'भारतीय ज्ञान परंपरा एवं समरसता के मूल तत्व' पर बात की। अध्यक्षता आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने की। स्वागत प्रो. आशीष श्रीवास्तव और सम्मन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया। संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम में प्रो. जगदीश सिंह दीक्षित, प्रो. ओपी चौधरी, प्रो. अजय कुमार सिंह, डॉ. संतोष सिंह आदि उपस्थित रहे।

हिंदुस्तान, पृष्ठ-07, दिनांक.07.04.2026

भारत ने जीवन मूल्यों को उपदेशों से नहीं आचरण से आत्मसात किया : इंद्रेश कुमार

वाराणसी। भारत ने जीवन मूल्यों को उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया है। इसलिए सामाजिक समरसता को भी केवल विचार तक सीमित न रखकर व्यवहार एवं आचरण में उतारना जरूरी है। ये बातें सोमवार को आईयूसीटीई में आयोजित राष्ट्रीय संविमर्श कार्यक्रम में आरएसएस नेता डॉ. इंद्रेश कुमार ने कही।

मुख्य अतिथि गुजरात विद्यापीठ के कुलपति प्रो. हर्षद पटेल ने कहा कि सामाजिक समरसता की प्रमुख जिम्मेदारी शिक्षक पर ही निर्भर करती है। आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि किसी भी परिवर्तन के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण साधन है। इसलिए शिक्षक को भूमिका सर्वाधिक निर्णायक है।

प्रो. सुनील सिंह, प्रो. आशीष श्रीवास्तव, डॉ. राजा पाठक, प्रो. पृथ्वीश नाग ने विचार रखे। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के

वसुधैव कुटुंबकम को मजबूत करने की जरूरत

वाराणसी। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच काशी-पूर्वी यूपी की ओर से काजी साहुल्लापुरा स्थित सिटी गल्स इंटरमीडिएट कॉलेज में ईद मिलन समारोह का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक व मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के मार्गदर्शक डॉ. इंद्रेश कुमार ने सभी को ईद की बधाई दी। कहा कि भारत की संस्कृति वसुधैव कुटुंबकम की भावना पर आधारित है। जहां पूरा विश्व एक परिवार के रूप में है। हमें अपने देश के भीतर भी इसी भावना को मजबूत करना होगा। पूर्व सांसद डॉ. राजेश मिश्रा, हाजी रईस अहमद आदि ने ईद की सभी को मुबारकबाद दिया। संचालन मो. अजहरुद्दीन व धन्यवाद ज्ञापन ताज मोहम्मद ने किया। ब्यूरो

समावेश पर बल दिया। इस मौके पर प्रो. जगदीश सिंह दीक्षित, प्रो. ओपी चौधरी, प्रो. अजय सिंह, डॉ. संतोष मौजूद रहे। ब्यूरो

अमर उजाला, पृष्ठ-06, दिनांक.07.04.2026

सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श का आयोजन अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र

अर्श संदेश ब्यूरो

डॉ उदय शंकर भगत

वाराणसी। आईयूसीटीई वाराणसी में हुआ। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता समावेशिता एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना तथा शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करना रहा कार्यक्रम का शुभारंभ उद्घाटन सत्र से हुआ जिसकी शुरुआत मंगलाचरण दीप प्रज्वलन तथा मौ. सरस्वती एवं महामना पींडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने से हुई। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मा. डॉ. इंद्रेश कुमार जो प्रख्यात चिंतक रहे मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल कुलपति गुजरात विद्यापीठ गुजरात जबकि उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. प्रेम नारायण सिंह निदेशक,



आईयूसीटीई, वाराणसी ने की आईयूसीटीई के संकाय प्रमुख प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने सभी गणमान्य अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया साथ ही कार्यक्रम के उद्देश्यों एवं उसकी संरचना की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए इसकी महत्ता को रेखांकित किया। सत्र का संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक द्वारा प्रस्तुत किया गया

मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. इंद्रेश कुमार जी ने अपने उद्घोषण में कहा कि भारत ने जीवन मूल्यों को उपदेशों से नहीं बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया है अतः सामाजिक समरसता को भी केवल विचार तक सीमित न रखकर व्यवहार एवं आचरण में उतारना आवश्यक है मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल कुलपति गुजरात विद्यापीठ गुजरात ने अपने संबोधन में समावेशी एवं

न्यायसंगत शिक्षा पर बल देते हुए कहा कि सामाजिक समरसता की प्रमुख जिम्मेदारी शिक्षक पर ही निर्भर करती है अध्यक्षीय उद्घोषण में प्रो. प्रेम नारायण सिंह निदेशक आईयूसीटीई ने कहा कि किसी भी परिवर्तन के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण साधन है अतः शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक निर्णायक है

द्वितीय सत्र में सामाजिक समरसता के निर्माण में शिक्षक: चुनौतियाँ और समाधान विषय पर फैल चर्चा आयोजित की गई इस सत्र में प्रो. सुनील कुमार सिंह शिक्षा संकाय बीएचयू वाराणसी ने मूल्य-परक शिक्षा एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर प्रकाश डाला जबकि प्रो. आशीष श्रीवास्तव संकाय प्रमुख शैक्षणिक एवं शोध आईयूसीटीई ने टएह 2020 के अंतर्गत समावेशी शिक्षा की आवश्यकता पर बल

दिया डॉ. राजा पाठक सहायक आचार्य आईयूसीटीई ने भारतीय ज्ञान परंपरा एवं समरसता के मूल तत्व को विस्तार से प्रस्तुत किया कार्यक्रम के समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रो. पृथ्वीश नाग पूर्व कुलपति महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी ने सामाजिक समरसता के संदर्भ में शिक्षा की भूमिका पर अपने विचार रखे मुख्य अतिथि प्रो. बिहारी लाल शर्मा कुलपति सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के समावेश पर बल दिया अध्यक्षीय उद्घोषण में प्रो. प्रेम नारायण सिंह निदेशक आईयूसीटीई ने कार्यक्रम के सफल आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के संविमर्श समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं

अर्श संदेश, पृष्ठ-04, दिनांक-07.04.2026

आईयूसीटीई, वाराणसी में सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका पर राष्ट्रीय संविमर्श आयोजित

वाराणसी, अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई), वाराणसी में आज सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता, समावेशिता एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना तथा शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन तथा माँ सरस्वती एवं महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात चिंतक डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत में जीवन मूल्यों को केवल उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया गया है। उन्होंने सामाजिक समरसता को व्यवहार में उतारने पर बल दिया। मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल, कुलपति, गुजरात



विद्यापीठ ने अपने संबोधन में समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि सामाजिक समरसता की जिम्मेदारी मुख्यतः शिक्षक पर निर्भर करती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने शिक्षा को परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम बताया। आईयूसीटीई के संकाय प्रमुख प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की

रूपरेखा एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। सत्र का संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक ने प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में सामाजिक समरसता के निर्माण में शिक्षक: चुनौतियाँ और समाधान विषय पर पैनल चर्चा आयोजित हुई। इसमें प्रो. सुनील कुमार सिंह (बीएचयू) ने मूल्य-परक शिक्षा एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर विचार रखे, जबकि प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने नई शिक्षा नीति

2020 के अंतर्गत समावेशी शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. राजा पाठक ने भारतीय ज्ञान परंपरा एवं समरसता के मूल तत्वों को विस्तार से प्रस्तुत किया। समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रो. पृथ्वीश नाग, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ ने शिक्षा की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के समावेश पर बल दिया। अध्यक्षीय उद्घोषण में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो. जगदीश सिंह दीक्षित, प्रो. ओ.पी. चौधरी, प्रो. अजय कुमार सिंह, डॉ. संतोष सिंह सहित 100 से अधिक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

इंडिया डायरेक्ट न्यूज़, पृष्ठ-07, दिनांक-07.04.2026

आईयूसीटीई, वाराणसी में "सामाजिक समरसता : शिक्षक की भूमिका" पर राष्ट्रीय संविमर्श आयोजित

दैनिक कर्मठ भारत

वाराणसी। अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई), वाराणसी में आज "सामाजिक समरसतारु शिक्षक की भूमिका" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता, समावेशिता एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना तथा शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करना रहा।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन तथा माँ सरस्वती एवं महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात चिंतक डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत में जीवन मूल्यों को केवल उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया गया है। उन्होंने सामाजिक समरसता को व्यवहार में उतारने पर बल दिया। मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल,



कुलपति, गुजरात विद्यापीठ ने अपने संबोधन में समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि सामाजिक समरसता की जिम्मेदारी मुख्यतः शिक्षक पर निर्भर करती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने शिक्षा को परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम बताया।

आईयूसीटीई के संकाय प्रमुख प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने सभी

अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। सत्र का संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक ने प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र में "सामाजिक समरसता के निर्माण में शिक्षकरु चुनौतियाँ और समाधान" विषय पर पैनल चर्चा आयोजित हुई। इसमें प्रो. सुनील कुमार सिंह (बीएचयू) ने मूल्य-परक शिक्षा एवं भावनात्मक

बुद्धिमत्ता पर विचार रखे, जबकि प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने 'नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत समावेशी शिक्षा' की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. राजा पाठक ने भारतीय ज्ञान परंपरा एवं समरसता के मूल तत्वों को विस्तार से प्रस्तुत किया।

समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रो. पृथ्वीश नाग, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ ने शिक्षा की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के समावेश पर बल दिया। अध्यक्षीय उद्घोषण में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो. जगदीश सिंह दीक्षित, प्रो. ओ.पी. चौधरी, प्रो. अजय कुमार सिंह, डॉ. संतोष सिंह सहित 100 से अधिक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

दैनिक कर्मठ भारत, पृष्ठ-04, दिनांक-07.04.2026

आईयूसीटीई, वाराणसी में सामाजिक समरसता : शिक्षक की भूमिका पर राष्ट्रीय संविमर्श आयोजित

भारती सिटी अपडेट/
जान्हवी व माँ

वाराणसी । अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई), वाराणसी में आज सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता, समावेशिता एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना तथा शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन तथा माँ सरस्वती एवं महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर पुष्पार्जलि अर्पित कर किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात चिंतक डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत में जीवन मूल्यों को केवल उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया गया है। उन्होंने सामाजिक समरसता को व्यवहार में उतारने पर बल



दिया। मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल, कुलपति, गुजरात विद्यापीठ ने अपने संबोधन में समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि सामाजिक समरसता की जिम्मेदारी मुख्यतः शिक्षक पर निर्भर करती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने शिक्षा को परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम बताया। आईयूसीटीई के संकाय प्रमुख प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने सभी अतिथियों

का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। सत्र का संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक ने प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में हसामाजिक समरसता के निर्माण में शिक्षक: चुनौतियाँ और समाधान विषय पर पैनल चर्चा आयोजित हुई। इसमें प्रो. सुनील कुमार सिंह (बीएचयू) ने ह्यमूल्य-परक शिक्षा एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर विचार रखे, जबकि प्रो. आशीष श्रीवास्तव

ने ह्यनई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत समावेशी शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. राजा पाठक ने ह्यभारतीय ज्ञान परंपरा एवं समरसता के मूल तत्वों को विस्तार से प्रस्तुत किया। समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रो. पृथ्वीश नाग, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ ने शिक्षा की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के समावेश पर बल दिया। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो. जगदीश सिंह दीक्षित, प्रो. ओ.पी. चौधरी, प्रो. अजय कुमार सिंह, डॉ. संतोष सिंह सहित 100 से अधिक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

भारती सिटी अपडेट, पृष्ठ-03. दिनांक.07.04.2026

आईयूसीटीई, वाराणसी में "सामाजिक समरसता शिक्षक की भूमिका" पर राष्ट्रीय संविमर्श आयोजित।

वाराणसी, अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई), वाराणसी में आज "सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता, समावेशिता एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना तथा शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन तथा माँ सरस्वती एवं महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर पुष्पार्जलि अर्पित कर किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात चिंतक डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत में जीवन मूल्यों को केवल उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया गया है। उन्होंने सामाजिक समरसता को व्यवहार में उतारने पर बल दिया। मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल, कुलपति,

गुजरात विद्यापीठ ने अपने संबोधन में समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि सामाजिक समरसता की जिम्मेदारी मुख्यतः शिक्षक पर निर्भर करती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने शिक्षा को परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम बताया। आईयूसीटीई के संकाय प्रमुख प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। सत्र का संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक ने प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में "सामाजिक समरसता के निर्माण में शिक्षक: चुनौतियाँ और समाधान" विषय पर पैनल चर्चा आयोजित हुई। इसमें

प्रो. सुनील कुमार सिंह (बीएचयू) ने "मूल्य-परक शिक्षा एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता" पर विचार रखे, जबकि प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने "नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत समावेशी शिक्षा की



आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. राजा पाठक ने भारतीय ज्ञान परंपरा एवं समरसता के मूल तत्वों को विस्तार से प्रस्तुत किया। समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रो. पृथ्वीश नाग, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ ने शिक्षा की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि प्रो. बिहारी लाल

शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के समावेश पर बल दिया। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने

कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो. जगदीश सिंह दीक्षित, प्रो. ओ.पी. चौधरी, प्रो. अजय कुमार सिंह, डॉ. संतोष सिंह सहित 100 से अधिक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

राष्ट्रीय युवा, पृष्ठ-03. दिनांक.07.04.2026

आईयूसीटीई, वाराणसी में "सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका" पर राष्ट्रीय सविमर्श आयोजित

लक्ष्य द टारगेट वाराणसी, अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई), वाराणसी में आज "सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सविमर्श का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता, समावेशिता एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना तथा शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करना रहा।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन तथा माँ सरस्वती एवं महात्मा पंडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात चिंतक डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत में जीवन मूल्यों को केवल उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया गया है। उन्होंने सामाजिक समरसता को व्यवहार में उतारने पर बल दिया।

मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल, कुलपति, गुजरात विद्यापीठ ने अपने संबोधन में समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि सामाजिक समरसता को जिम्मेदारी मुख्यतः शिक्षक पर



निर्भर करती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने शिक्षा को परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम बताया।

आईयूसीटीई के संकाय प्रमुख प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। सत्र का संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक ने प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र में "सामाजिक समरसता के निर्माण में शिक्षक: चुनौतियाँ और समाधान" विषय पर पैनल चर्चा आयोजित हुई। इसमें प्रो. सुनील कुमार सिंह (बीएचयू) ने 'मूल्य-परक शिक्षा एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता' पर विचार रखे, जबकि प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने 'नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत समावेशी शिक्षा' की

आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. राजा पाठक ने 'भारतीय ज्ञान परंपरा एवं समरसता' के मूल तत्वों को विस्तार से प्रस्तुत किया।

समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रो. फ़्यूश नाग, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी कानूनी विद्यापीठ ने शिक्षा की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के समावेश पर बल दिया। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो. जगदीश सिंह दीक्षित, प्रो. ओ.पी. चौधरी, प्रो. अजय कुमार सिंह, डॉ. संतोष सिंह सहित 100 से अधिक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

लक्ष्य द टारगेट, पृष्ठ-07, दिनांक-07.04.2026

06 अप्रैल 2026 को सामाजिक समरसता : शिक्षक की भूमिका विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सविमर्श का आयोजन अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र



दिनेश सार सागर
क्राइम थ्यूरो मधुसूदन विद्यार्थी

आम्हा। आईयूसीटीई वाराणसी में हुआ। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता, समावेशिता एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना तथा शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ उद्घाटन सत्र से हुआ, जिसको मुख्यतः मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन तथा माँ सरस्वती एवं महात्मा पंडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने से हुई। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. इंद्रेश कुमार जी, प्रख्यात चिंतक रहे, मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल, कुलपति, गुजरात विश्वविद्यालय, गुजरात, जबकि उद्घाटन सत्र को अध्यक्षता प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, आईयूसीटीई, वाराणसी



ने की। आईयूसीटीई के संकाय प्रमुख, प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने सभी गणमान्य अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया, साथ ही कार्यक्रम के उद्देश्यों एवं उसकी संरचना की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए इसकी महत्ता को रेखांकित किया। सत्र का संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक द्वारा प्रस्तुत किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. इंद्रेश कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत में जीवन मूल्यों को उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया है; अतः सामाजिक समरसता को भी केवल विचार तक सीमित न रखकर अवधारणा के माध्यम से उतारना आवश्यक है। मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल, कुलपति, गुजरात विश्वविद्यालय, गुजरात ने अपने संबोधन में समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि सामाजिक समरसता को प्रमुख जिम्मेदारी शिक्षक पर ही निर्भर करती



है। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, आईयूसीटीई ने कहा कि विज्ञान भी परिवर्तन के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण साधन है, अतः शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक निर्णायक है। द्वितीय सत्र में सामाजिक समरसता के निर्माण में शिक्षक: चुनौतियाँ और समाधान विषय पर पैनल चर्चा आयोजित की गई। इस सत्र में प्रो. सुनील कुमार सिंह, शिक्षा संकाय, बीएचयू, वाराणसी ने 'मूल्य-परक शिक्षा एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता' पर प्रकाश डाला, जबकि प्रो. आशीष श्रीवास्तव, संकाय प्रमुख (शैक्षणिक एवं जीव), आईयूसीटीई ने 'उत्तर 2020 के अंतर्गत समावेशी शिक्षा को अवधारणा' पर बल दिया। डॉ. राजा पाठक, स्वागतक आचार्य, आईयूसीटीई ने 'भारतीय ज्ञान परंपरा एवं समरसता के मूल तत्व' को विस्तार से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रो. फ़्यूश नाग, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी कानूनी विद्यापीठ, वाराणसी ने शिक्षा की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के समावेश पर बल दिया। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, आईयूसीटीई ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी, साहायक आयुक्त, आईयूसीटीई, वाराणसी द्वारा किया गया। बैठक के अन्य सम्मत्त संस्थान सदस्यों एवं कर्मचारियों ने भी इस कार्यक्रम के सफल आयोजन प्रशिक्षण में वाकित योगदान दिया। इस कार्यक्रम में प्रो. जगदीश सिंह दीक्षित, प्रो. ओ.पी. चौधरी, प्रो. अजय कुमार सिंह, डॉ. संतोष सिंह सहित 100 से अधिक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

दिनेश सार सागर, पृष्ठ-10, दिनांक-07.04.2026

सामाजिक समरसता- शिक्षक की भूमिका विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श का हुआ आयोजन

वाराणसी (लोकतंत्र)। सामाजिक समरसता शिक्षक की भूमिका विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श का आयोजन अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई), वाराणसी में हुआ। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता, समावेशिता एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना तथा शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ उद्घाटन सत्र से हुआ, जिसकी शुरुआत मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन तथा माँ सरस्वती एवं महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने से हुई। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मा. डॉ. इंद्रेश कुमार जी, प्रख्यात चिंतक रहे, मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल, कुलपति, गुजरात विद्यापीठ, गुजरात, जबकि

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, आईयूसीटीई, वाराणसी ने की। आईयूसीटीई के संकाय प्रमुख, प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने सभी गणमान्य अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया, साथ ही कार्यक्रम के उद्देश्यों एवं उसकी संरचना को रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए इसकी महत्ता को रेखांकित किया। सत्र का संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक द्वारा प्रस्तुत किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. इंद्रेश कुमार जी ने अपने उद्घोषण में कहा कि भारत ने जीवन मूल्यों को उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया है; अतः सामाजिक समरसता को भी केवल

विचार तक सीमित न रखकर व्यवहार एवं आचरण में उतारना आवश्यक है। मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल,



कुलपति, गुजरात विद्यापीठ, गुजरात ने अपने संबोधन में समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा पर बल देते हुए कहा कि सामाजिक समरसता की प्रमुख

जिम्मेदारी शिक्षक पर ही निर्भर करती है। अध्यक्षीय उद्घोषण में प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, आईयूसीटीई ने कहा कि किसी भी परिवर्तन के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण साधन है, अतः शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक निर्णायक है। द्वितीय सत्र में सामाजिक समरसता के निर्माण में शिक्षक-चुनौतियों और समाधान विषय पर पैलल चर्चा आयोजित की गई। इस सत्र में प्रो. सुनील कुमार सिंह, शिक्षा संकाय, बीएचयू, वाराणसी ने ४०% मूल्य-परक शिक्षा एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर प्रकाश डाला, जबकि प्रो. आशीष श्रीवास्तव, संकाय प्रमुख (शैक्षणिक एवं शोध), आईयूसीटीई ने ४०% मूल्य-परक समावेशी शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. राजा पाठक, सहायक

आचार्य, आईयूसीटीई ने भारतीय ज्ञान परंपरा एवं समरसता के मूल तत्व को विस्तार से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रो. पृथ्वीश नाग, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने सामाजिक समरसता के संदर्भ में शिक्षा की भूमिका पर अपने विचार रखे। मुख्य अतिथि प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के समावेश पर बल दिया। अध्यक्षीय उद्घोषण में प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, आईयूसीटीई ने कार्यक्रम के सफल आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के संविमर्श समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

लोकतंत्र प्रकाश, पृष्ठ-02, दिनांक.07.04.2026

विविध

मुरादाबाद
मंगलवार, 07 अप्रैल 2026
Email-bharticityupdate@gmail.com

आईयूसीटीई, वाराणसी में सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका पर राष्ट्रीय संविमर्श आयोजित

भारती सिटी अपडेट/जान्हवी वर्मा वाराणसी, अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई), वाराणसी में आज सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता, समावेशिता एवं मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना तथा शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन तथा माँ सरस्वती एवं महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात चिंतक डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत में जीवन मूल्यों को केवल उपदेशों से नहीं, बल्कि आचरण के माध्यम से आत्मसात किया गया है। उन्होंने सामाजिक समरसता को व्यवहार में उतारने पर बल दिया।



मुख्य अतिथि प्रो. हर्षद पटेल, कुलपति, गुजरात विद्यापीठ ने अपने संबोधन में समावेशी एवं न्यायसंगत शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि सामाजिक समरसता की जिम्मेदारी मुख्यतः शिक्षक पर निर्भर करती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आईयूसीटीई के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण

सिंह ने शिक्षा को परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम बताया। आईयूसीटीई के संकाय प्रमुख प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। सत्र का संचालन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक ने प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में सामाजिक समरसता के निर्माण में शिक्षक-चुनौतियों और समाधान विषय पर पैलल चर्चा आयोजित हुई। इसमें प्रो. सुनील कुमार सिंह (बीएचयू) ने ह्यमूल्य-परक शिक्षा एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर विचार रखे, जबकि प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने ह्यनई

शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत समावेशी शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. राजा पाठक ने भारतीय ज्ञान परंपरा एवं समरसता के मूल तत्वों को विस्तार से प्रस्तुत किया। समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि प्रो. पृथ्वीश नाग, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ ने शिक्षा की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि प्रो. बिहारी लाल शर्मा, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति के समावेश पर बल दिया। अध्यक्षीय उद्घोषण में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो. जगदीश सिंह दीक्षित, प्रो. ओ.पी. चौधरी, प्रो. अजय कुमार सिंह, डॉ. संतोष सिंह सहित 100 से अधिक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

सामाजिक समरसता में शिक्षक की भूमिका पर राष्ट्रीय संविमर्श



वाराणसी (जनवार्ता)। सुन्दरपुर स्थित अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई) में सामाजिक समरसता: शिक्षक की भूमिका विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श सोमवार को आयोजित हुआ। जिसका उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से समरसता, समावेशिता और मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करना रहा। जहाँ उद्घाटन सत्र की शुरुआत मंगलाचरण, दीप प्रज्वलन व माँ सरस्वती तथा पं. मदन मोहन मालवीय की प्रतिमा पर पुष्पांजलि से हुई। इसमें मुख्य वक्ता डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि सामाजिक समरसता को व्यवहार में उतारना आवश्यक है। मुख्य अतिथि गुजरात विद्यापीठ के कुलपति प्रो. हर्षद पटेल ने समावेशी शिक्षा पर बल दिया। वही अध्यक्षता करते हुए निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने शिक्षा को परिवर्तन का प्रमुख साधन बताया। जबकि द्वितीय सत्र में सामाजिक समरसता के निर्माण में शिक्षक विषय पर पैनल चर्चा हुई, जिसमें मूल्यपरक शिक्षा, भावनात्मक बुद्धिमत्ता व नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत समावेशी शिक्षा पर विचार रखे गए। इसमें समापन सत्र में प्रो. पृथ्वीश नाग व प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों के महत्व पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में 100 से अधिक शिक्षाविद उपस्थित रहे।

सुमित जनवार्ता

कार्यक्रम की झलकियाँ





अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
आईयूसीटीई परिसर, सुंदर बगिया
नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005
उत्तर प्रदेश

संपर्क नंबर.: 0542-2368823
ईमेल: directoroffice@iucte.ac.in